ग़दीर और मक़ामे हज़रत अली अ0

आयतुल्लाहिल उज़मा सै0 अली ख़ामेना–ई साहब

पैग़म्बरे इस्लाम (स0) की जानशीनी शीओं के अक़ीदे के मुताबिक़ एक इलाही मन्सब है कि जो ख़ुदा की तरफ से उसके हक़दार को मिलती है। रसूले ग्रामी (स0) ने इस्लाम के शुरु ही से कि जब उन्होंने इस्लाम की दावत को आम लोगों में भी शुरु किया और उन्होंने अपने अज़ीज़ों और रिश्तेदारों को अपनी रिसालत से आगाह किया और क़यामत के अज़ाब से डराया और इन ही तबलीग़ी महफिलों में अपनी जानशीनी के मसले को भी बयान किया और बनी हाशिम में से 45 लोगों को बुलाकर हुक्मे इलाही को बयान किया। पैग़म्बरे इस्लाम (स0) ने फ़रमाया तुम में से जो कोई भी सबसे पहले मेरी दावत क़ुबूल करेगा और मेरी मदद करेगा मेरा भाई, वसी और जानशीन होगा और तारीख़ ने भी इस बात की गवाही दी कि सिवाए हज़रत अली (अ0) के कोई अपनी जगह से खड़ा न हुआ और किसी ने रसूले अकरम (स0) की दावत को क़ुबूल और मदद करने की हिमायत नहीं की। लिहाज़ा रसूले अकरम (स0) ने इस मजमे में फ़रमाया कि यह नौजवान (हज़रत अली अ0) मेरा वसी और जानशीन है जैसा कि यह वाक़ेआ तारीख़ लिखने वालों और मुफ़स्सिरीन के दरमियान ''यौमुद्दार'' और ''बदउद्दावत'' के नाम से मशहूर है इसके अलावा भी रसूलुल्लाह (स0) ने अपनी 23 साला रिसालत में मुख़तलिफ मक़ामात और मुनासबतों पर हज़रत अली (अ0) की जानशीनी के मसले को उम्मते मुस्लिमा के सामने बयान किया और उनके मक़ाम को सबसे ज़ियादा बरतर और अहम क़रार दिया और सबसे ज़ियादा अहम और ख़ास इम्तियाज़ कि जो हज़रत अली (अ0) के मानने वालों और उनके दोस्तों के लिए ख़ुशी का बाअिस और आपसे हसद रखने वालों के लिए जलन का बाअिस बनती है, ''हदीसे मन्ज़ेलत'' है यानी रसूले ख़ुदा (स0) ने हज़रत अली (अ0) को अपने लिए ऐसा समझा कि जैसे मूसा (अ0) के लिए हारून (अ0)।

इसके अलावा एक और हदीस (हदीसे सद्दे अबवाब) है मदीने हिजरत के बाद अस्हाबे पैग़म्बर (स0) के घरों के दरवाज़े मस्जिदे नबवी में खुला करते थे कुछ ही अरसे बाद रसूले ख़ुदा (स0) को हुक्मे इलाही होता है कि ऐ मुहम्मद मस्जिदे नबवी में खुलने वाले तमाम दरवाज़े बन्द कर दिये जाएँ सिवाए हज़रत अली (अ0) के घर का दरवाज़ा। इसी तरह एक और हदीस कि जिसे हम ''हदीसे उख़ुव्वत'' के नाम से पहचानते हैं हज़रत अली (अ0) के बुलन्द मक़ाम की गवाही देती है, इस हदीसे उख़ुव्वत का माजरा कुछ इस तरह से है कि जब रसले ख़ुदा (स0) ने तमाम मुहाजिरीन व अन्सार को एक दूसरे का और हज़रत अली (अ0) को अपना भाई क़रार दिया।

इसके अलावा और दूसरी अहादीस मस्लन ''हदीसे इब्लाग़'' (पयामे बराअत) कि यह भी हज़रत अली (अ0) के लिए बहुत सी फ़ख़र करने वाली बातों में से एक फ़ख़र वाली बात है और ख़ास तौर पर अबुबक्र के मुक़ाबले में एक बड़ी फ़ख़्र करने वाली बात है और सबसे बढ़कर रोज़े मुबाहला कि जिस दिन ख़ुदावन्दे आलम ने सूर–ए–आले इमरान में हज़रत अली (अ0) को

रसूले ख़ुदा का नफ्स क़रार दिया और आख़िरकार सबसे ज़्यादा वाज़ेह और मुस्तनद ''हदीसे ग़दीर'' है कि जो रसूले ख़ुदा (स0) ने अपने आख़री हज (10 हि0) से वापसी पर बयान फरमायी।

पैग़म्बरे इस्लाम (स0) ने 10वीं हिजरी में हज़ारों लोगों के दरमियान कि जो सबके सब उम्मते मुस्लिमा में से थे हज्जे इब्राहीमी (अ0) को अदा किया और सारे ज़मान–ए–जाहिलियत के क़वानीन को एक बार फिर ग़लत साबित करके ख़त्म किया और मदीने की तरफ वापसी शुरु की अभी मक्के से कुछ ही दूर हुए थे कि यह आयत नाज़िल हुई : ''या अय्युहररसूल बल्लिग़ मा उन्ज़िल इलैइका मिररब्बिका वइन लम तफ्अल फ़मा बल्लग़ता रिसालतहू'' (सूर–ए–माएदा आयत–67) यह एक ऐसा अहम फ़रीज़ा था जिसका अदा न करना रिसालत को न पहुँचाने के बराबर था और फिर ख़ुदावन्द इस आयत के आगे ही बयान फरमाता है : ''वल्लाहु यअसिमुका मिनन्नास'' यानी ख़ुदावन्द तुमको लोगों के शर से बचाएगा। इस आयत के इतनी खुली वज़ाहत के साथ नाज़िल होने पर पैग़म्बर (स0) के लिए उनका फरीज़ा रौशन हो गया। आयत के नाज़िल होने के फौरन बाद रसूले ख़ुदा (स0) ने क़ाफले को रोकने का हुक्म दिया और वह भी ऐसी हालत में कि जब हाजी एक ऐसी जगह के क़रीब हो चुके थे कि जहाँ से मदीना, मिस्र और इराक़ के मुसाफिर अलग–अलग हो जाते थे, अमीने वही (स0) फरमाते हैं कि आज वही के बयान के साथ–साथ आप लोगों से कुछ और भी कहना चाहूँगा। यह एक ऐसी जगह थी कि जहाँ रसूलुल्लाह (स0) जो कुछ इरशाद फरमाते वहाँ मौजूद हज़ारों सुनने वाले वापसी पर अपने इलाक़ों में दूसरों तक पहुँचाते और फिर आख़िरकार मक़ामे ग़दीरेख़ुम पर सब क़ाफले जमा हो गए मौसम बहुत गर्म था और लोगों को बहुत बचैनी से इस बात का इन्तिज़ार था कि आख़िर कौन सा हुक्मे इलाही है कि जिसके लिए रसूले ख़ुदा (स0) ने तमाम क़ाफलों को रोका है। पैग़म्बरे इस्लाम (स0) हज़ारों लोगों के दरमियान में से मिम्बर पर तशरीफ ले गये कि जो पालान शुतर का बना हुआ था रसूले ख़ुदा ने एक नज़र अपने चारो तरफ की भीड़ पर घुमाई कि जिस पर ख़ामोशी छायी थी और सब लोगों की निगाहें पैग़म्बरे इस्लाम (स0) पर जमी हुईं थीं ऐसे आलम में रसूले ख़ुदा ने इरशाद फरमाना शुरु किया और सबसे पहले ख़ुदा की हम्द व सना की फिर अपनी सदाक़त की बारे में लोगों से ज़बानी नयी तरह से बैअत ली लोगों ने यह आलम देखकर रोना शुरु कर दिया इसी दौरान रसूले ख़ुदा (स0) ने भीड़ पर नज़र डाली और हज़रत अली (अ0) को अपने पास बुलाया हज़रत अली (अ0) रसूले ख़ुदा के पास मिम्बर पर उनके बराबर में आ खड़े हुए इसके बाद रसूले ख़ुदा (स0) ने लोगों से फरमाया : ''या अय्युहन्नास मन कुन्त मौलाहु फहाज़ा अलिय्युन मौला'' और फरमाया कि ख़ुदाया उन लोगों को दोस्त रख कि जो अली (अ0) को दोस्त रखते हों और उन लोगों से दुश्मनी रख जो अली (अ0) से दुश्मनी रखते हैं और तमाम बातें पैग़म्बरे इस्लाम (स0) ने इस हालत में इरशाद फरमायीं कि जब पैग़म्बरे इस्लाम (स0) हज़रत अली (अ0) के हाथ को अपने हाथ में लेकर ऊपर उठाए हुए थे रसूलुल्लाह (स0) की इस बातचीत के ख़त्म होते ही एक ख़ेमा बनाया गया कि जिसमें लोगों ने क़ाफलों की सूरत में आना शुरु किया और लोगों ने हज़रत अली (अ0) के हाथ पर इस उनवान से कि वह रसूलुल्लाह (स0) के बाद उनके जानशीन और ख़लीफा–ए–बरहक़ हैं, बैअत की।

□□□